सिन्दूर

सुहाग का सेंदुर है आरजू हमारी,
मुझे दुर न करना मै हुँ तुम्हारी।
तेरी पहचान मेरी संदुर है,
ये दुनीया की दस्तूर है।
ये दिल मे उतरने वाले,
तेरे सिवा न मेरा कोई करीव है।
मै वो खुदकिस्तमत हुँ,
जो मेरा ये नसीव है।।

लेखक एवं प्रेषकः अमर नाथ साहु